5 प्रयत - इर सामाजिक विभिन्नता सामाजिक विभाजन काराप नहीं लेती है। के उत्रर - पर कोई आवश्यक नहीं है, कि हर सामा जिस विभिन्नता सामा जिस विभाजन का अगाधार होता है। संभवत ! दो समान समुदाम के विचार अलग हो सम्मे हैं, परनु हिन समान होगा। उदाहरणार्च मुख्यई भें भराष्ठियों दे हिंसा के जिकार व्यामेन पोंकी जातियाँ जिन्त थी, धार्म और जाति में किना ही सबसे हैं। परव उनका क्षेत्र एक ही था। वे खभी एक ही क्षेत्र उत्तर भारतीय थे। उनका दित समान था। वे सभी अपने व्यवसाय उनेर वेशा में संलग्न भी वस कारण हम कह सकते हैं, के हर सामाणिक विभिन्नता खामाधिक विभाजन का रूप नहीं ही सकती है।

6. प्रया- सामाणिक विभाजनों की राजनीति का परिणाम किन-किन चिजींपर · निर्भर करते हैं।

उत्तर - सामाणिक विभाजनों की राजनीति का गरिकाम न्द्रे निजों पर निर्भर करें ते हैं। जो निर्म किरियत हैं।

ा. लोग अपनी पह्चान स्व अस्तित्व तक ही सिकित रखना -पाहते हैं, बर्फाक प्रत्मेक मन्त्रम में राष्ट्रीय -वेत्रना के अलावा उप-राष्ट्रीय न्वेनना भी होते हैं। दूसरे शहदों में हम कह सकते हैं, किलोग उनगर अपने अहत्तरीम पहन्यान की राष्ट्रीय पहन्यान का हिस्सा मनते हैं, तो कोई समस्पा नहीं हो सकती है। उदाहरण स्वरूप वे किनमम के अधिकतर लोग खुद को विल्यामम ही मानते हैं। अले ही व उच और जर्मनी कोलते हों। ऐसे ही भारत विभिन्नता ओं का देश है, फिर भी सभी मामरिक सर्वप्रमंभ अपने की भारतीय मानते हैं।

2. द्सरा महत्वपूर्ण तत्व है, कि सम्पाम मा क्षेत्र विशेष की मीने की राजनीतिक दल देसे उहा रहा है। संविधान के दापरे में उनाने वाले और दूसरे सम्दामको है नुकसान न पहुंचाने वाली भोगों को भान

लेना उनासार आसान होता है। 7. प्रथन- भावी समाज में लोकतंत्र जी जिस्सेवारी और खोरप पर संविध क्रिकी वर्गन करें। उत्तर- टकराव एवं सामंपस्य लोकतेत्र की सिक्रीर, सिहिमों हैं, जिससे गुजरकर ही लोक सना उनपनी नीतियाँ नियारित करनी हैं। पे नीतियाँ ज्यासाती से निर्धारिक नहीं हो पार्त वलकी प्रातिसंदिता के कडीन परिवेश से गुभरते हुए सामंगरम का मार्स क वनाने का अगाम करा

प्रथम: में सिर्फ जाति के जालार पर कार्त में - जुनाबी नतीजे तपनर्श हो सकते १ उसके दो कारण अगरें।

उत्तर- ऐस्त कहा जाता है, के सामुराधिक समाज की संरचनाका उनाधार जाती है, क्योंकि एक जाति के लोग ही स्वभावित समुदाय का निर्माण करते हैं। दूसरे अन्य समुदाय के हितों से उनका हैन भिन्न होता है। परत् ऐसी वातनहीं है। सिर्फ जाति के आधार पर भारत में - जुनावी नती जे तप नहीं होते। उसके दो काला निम्नलिशिवत हैं।

(i) किसी भी निर्वाचन क्षेत्र का गठन इस प्रकार नहीं किया जाया है कि उसमें मात्र एक मतदाता रहें। ऐसा हो सकता है कि एक जानिक मतदाता की निर्जा की संस्था है कि मतदाता भी निर्जा के भतदाता भी निर्जा भी भी कि भतदाता भी निर्जा भी भी के भतदाता भी निर्जा भी कि भतिका निभाने हैं। अताव सम पार्टि एक इल एक हो आधिक जानि के लोगों का भरोसा हा शिल करना न्याहता हैंग

(ii) उनार जात्रम भावना रूपाची अग्र अन्द होना है में जाती पारि के भी हारती ही नहीं।

The state of the Author from the state of